IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि

विनिता कुमारी*

डॉ.सपना सुमन**

***** **पीएच.डी.शोधार्थी, संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त), पटना**

****** **असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त), पटना**

सारांश

आत्म-सम्मान व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है | आत्म-सम्मान का तात्पर्य व्यक्ति के स्वयं से जुड़े समस्त पहलूओं की जानकारी रखने के साथ-साथ उन्हें सकारात्मक तरीके से स्वीकार करने से है | आत्म-सम्मान मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता होती है | यह मनुष्य के मनोबल को बढ़ाती है | प्रबल आत्म-सम्मान वाले व्यक्ति अपने जीवन के समस्त पहलूओं को सरलतापूर्वक स्वीकार करने में सक्षम होते हैं | शैक्षणिक उपलब्धि विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान के आधार पर प्रभावित होती है | प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि से संबंधित है | वर्तमान शोध में पटना जिला के 500 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक विधि से प्रतिदर्श के रूप में चुना गया है | शोध का उद्देश्य शिक्षण माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अंतर तथा संबंध को जानना है | शोध परिणाम से ज्ञात हुआ कि शिक्षण माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है | आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य उच्च सकारात्मक संबंध पाया गया है |

मुख्य बिंदु: *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी, आत्म-सम्मान, शैक्षणिक उपलब्धि, सर्वांगीण विकास, सकारात्मक संबंध |*

परिचय

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के अंतर्गत मुख्य रूप से किशोरावस्था के विद्यार्थी आते हैं, जिनकी उम्र लगभग 14 से 16 वर्ष की होती है | इस अवस्था वाले विद्यार्थियों में मानसिक अस्थिरता पाई जाती है | इस उम्र में विद्यार्थी समाज के किसी भी इकाई से सकारात्मक या नकारात्मक दोनों ही तरह से आसानी पूर्वक प्रभावित हो जाते हैं | "किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान तथा

विरोध की अवस्था है " (स्टैंडले, 1904) रोस के शब्दों में, "किशोर का जीवन बहुत अधिक संवेगात्मक होता है जिसमें हमें एक बार फिर उसके अत्यधिक उग्र और निराशा की गहराईयों के बीच झूलते हुए व्यवहार के माध्यम से मानव व्यवहार के अनुकूल और प्रतिकूल दोनों पक्षों का ही मिला-जुला रूप देखने को मिलता है|" (1951,p.147) अतः यह अभिभावकों, भाई-बहन, पड़ोसी तथा समाज की जिम्मेदारी होती है कि वे किशोरों का व्यक्तित्व प्रभावी तथा आकर्षक बनाने में उनकी सहायता प्रदान करें | यदि किसी विद्यार्थी को सही दिशा में मार्गदर्शन दिया जाए तो उसके अंदर कलात्मक एवं सृजनात्मक कौशल का विकास किया जा सकता है | यही कौशल उस विद्यार्थी में आत्म-विश्वास निरुपित करने में सहायक हो सकता है और आत्म-विश्वास धीरे-धीरे आत्म-सम्मान का रूप धारण कर सकता है |

आत्म- सम्मान

आत्म- सम्मान व्यक्ति के स्वयं के गुण, योग्यता, व्यक्तित्व, पहचान इत्यादि को स्वीकार कर उसे आत्मसात करने की अवधारणा है | रोसबर्ग (2015) ने बताया कि आत्म-सम्मान एक प्रकार की मनोवृति है जो व्यक्ति के स्वयं के समस्त आयामों के पक्ष या विपक्ष में हो सकती है | आत्म- अवधारणा आत्म-सम्मान का मूल्यांकन पक्ष है | आत्म-सम्मान के अंतर्गत व्यक्ति के स्वयं से संबंधित व्यवहारात्मक तथा संज्ञानात्मक आयामों को पहचानने उसे स्वीकार कर योग्य बनाने की प्रक्रिया शामिल है | आत्म-सम्मान व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धि, साहस का स्तर, व्यवसायिक संतुष्टि इत्यादि की भविष्यवाणी करता है | यह स्वयं का स्वयं के प्रति विश्वास उत्पन्न करता है | (स्मिथ और मौके 2014) के अनुसार आत्म-अवधारणा वह है जो व्यक्ति स्वयं के बारे में सोचता है, और आत्म-सम्मान स्वयं का सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन है, जो हम स्वयं के बारे में महसूस करते हैं |

शैक्षणिक उपलब्धि

शैक्षणिक उपलब्धि विद्यार्थियों की शैक्षणिक यात्रा में प्राप्त एक उपलब्धि है, जो विद्यार्थियों की तत्कालीन अधिगम को प्रदर्शित करती है | शिक्षा जगत के किसी भी ग्रेड का सफल शिक्षण अधिगम विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में सहायता प्रदान करता है | विद्यालय विद्यार्थियों की शैक्षणिक संज्ञानात्मक उद्देश्य को पूरा कर विविध विषयों में नवीन प्रयोग करने में सहायता प्रदान करती है | यह विद्यार्थियों की शैक्षणिक गतिविधियों के साथ-साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाओं को भी शामिल करती है जिसका आकलन विविध माध्यमों से किया जाता है जैसे- लिखित परीक्षा, मौखिक परीक्षा, साक्षात्कार, असाइनमेंट, प्रतियोगिता, विविध गतिविधियों में भागीदारी इत्यादि | क्रो. और क्रो.(1969) के अनुसार शैक्षणिक उपलब्धि का अर्थ अधिगम क्षेत्र में प्राप्त अनुदेशन के माध्यम से अधिगमकर्ताओं को प्राप्त लाभ से है |

सम्बंधित साहित्य समीक्षा

चीमा और भारद्वाज (2021) ने किशोरों के बीच गृह पर्यावरण के संबंध में आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया | शोध का उद्देश्य किशोरों का आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध स्थापित करना था | अध्ययन में सरल यादृच्छिक विधि के माध्यम से 200 किशोरों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया | शोध परिणाम से ज्ञात होता है कि गृह पर्यावरण के संबंध में किशोरों के आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सकारात्मक संबंध है | आत्म-सम्मान अच्छा होने के कारण किशोर अपनी समस्या का आसानी पूर्वक समाधान कर लेते हैं |

कन्वर्ट एट.अल.(2017) ने प्राथमिक विद्यालय के अल्पसंख्यक तथा बहुसंख्यक विद्यार्थियों का आत्म-अवधारणा, आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया | अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अल्पसंख्यक तथा बहुसंख्यक दोनों वर्गों के विद्यार्थियों का सकारात्मक आत्म-सम्मान है | बहुसंख्यक विद्यार्थियों की तुलना में अल्पसंख्यक विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा तथा शैक्षणिक उपलब्धि कम है |

जियोफ्रे एट.अल.(2017) ने शैक्षणिक उपलब्धि हेतु संज्ञानात्मक और संज्ञानात्मक कारकों की संयुक्त भूमिका की जांच की | शोध के लिए छठी तथा आठवीं ग्रेड के इटली के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया | शोध परिणाम से ज्ञात हुआ कि संज्ञानात्मक कारकों का शैक्षणिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है | आत्म-सम्मान का अप्रत्यक्ष प्रभाव भी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ता है |

हसन,जामी,अकील (2016) ने अनुपस्थित तथा समयनिष्ट विद्यार्थियों की शैक्षणिक-अवधारणा, आत्म- सम्मान तथा शैक्षिक उपलब्धि में अनुपस्थिति की भूमिका पर अध्ययन किया | शोध के लिए 200 प्रतिदर्श का चयन उद्देश्य पूर्ण तकनीक विधि का प्रयोग किया गया, जिसमें 100 अनुपस्थित तथा 100 समयनिष्ठ विद्यार्थी शामिल थे | शोध परिणाम से ज्ञात हुआ कि समयनिष्ट विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से अच्छी है | आत्मा-अवधारणा तथा आत्म-सम्मान में सकारात्मक संबंध है |

अध्ययन की सार्थकता

माध्यमिक विद्यालय वह स्थान है, जहां मुख्य रूप से किशोरों के जीवन को उत्कृष्ट बनाने के लिए शिक्षा दी जाती है | माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र के जीवन में शारीरिक मानसिक भावनात्मक जैसे कई विकास तीव्र गति से होते हैं जो छात्रों के व्यक्तिगत जीवन, व्यक्तिगत पहचान, आत्म-सम्मान और उसके मन में प्रगति के प्रति गलत अवधारणा उत्पन्न कर सकते हैं | इस प्रकार यह उनके व्यक्तिगत, शैक्षणिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित कर सकता है, जो विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित है | चीमा और भारद्वाज (2021), जियोफ्रे एट.अल. (2017) हसन,जामी,अकील (2016) कन्वर्ट एट.अल. (2017) के अध्ययनों में छात्रों के आत्म-सम्मान और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध दिखाई देते हैं| अतः शोधार्थी यह पता लगाना चाहती हैं कि विद्यार्थियों में स्वयं के समस्त पहलूओं की कितनी जानकारी है तथा इसका प्रभाव उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर किस प्रकार पड़ता है |

शोध उद्देश्य

1. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में सार्थक अंतर को ज्ञात करना |
2. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर को जानना |
3. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध की जांच करना |

नल परिकल्पना

1. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
2. शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
3. माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संग्रह के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है |

जनसंख्या

वर्तमान अध्ययन की जनसंख्या के रूप में पटना जिला के अंग्रेजी माध्यम तथा हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है |

प्रतिदर्श

वर्तमान अध्ययन सरल यादृच्छिक प्रतिदर्श चयन पर आधारित है | बिहार राज्य के पटना जिला के माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 9 वीं के विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया है | कुल 500 प्रतिदर्श शामिल हैं, जिसमें 262 अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थी तथा 238 हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को लिया गया है |

शोध उपकरण

1. **आत्म-सम्मान मापनी** : प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित एवं वैधिकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है | आत्म-सम्मान शोध उपकरण के पाँच आयाम है जिसमें स्वयं की समझ, स्वयं की भावन की समझ, समाज की समझ, स्वयं की अभिप्रेरणा तथा स्वयं निर्णय लेना शामिल है |
2. **शैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण:** प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित एवं वैधिकृत शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है | शैक्षणिक उपलब्धि परीक्षण के एकांश, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, सामान्य ज्ञान, गणित, अंग्रेजी तथा हिन्दी विषय से तैयार किये गए हैं |

सांख्यिकी प्रविधियां

आकड़ों के विश्लेषण के लिए माध्य,मानक विचलन,अनुपात परीक्षण(टी परीक्षण) तथा सहसंबंध सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है |

परिकल्पनाओं का विश्लेषण

नल परिकल्पना-1 शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

तालिका -1

शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान की सार्थकता

शिक्षण माध्यम	माध्य	मानक विचलन	संख्या	टी	पी	टिप्पणी
अंग्रेजी	88.84	8.099	262	26.93	.000	सार्थक
हिन्दी	67.95	9.238	238			

(1% सार्थकता स्तर पर, df = 498 स्वतंत्रता अंश के लिए तालिका मूल्य 2.58)

उपर्युक्त तालिका 1 से स्पष्ट है कि शिक्षण माध्यम के आधार पर प्राप्त 'टी' मूल्य का मान (26.93)है जो 1% सार्थकता स्तर के तालिका मान (2.58) से अधिक है | इसलिए नल परिकल्पना अस्वीकार किया जाता है | अर्थात शिक्षण माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में सार्थक अंतर है |

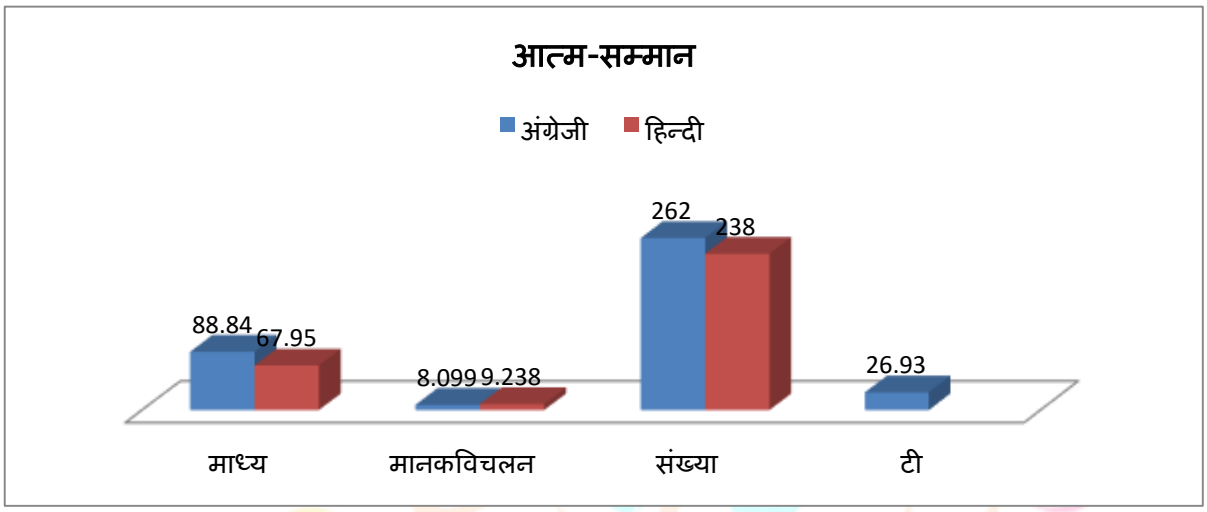

आकृति -1: शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान का कुलावृति, मध्यमान और मानक विचलन का दंड आरेख

नल परिकल्पना- 2 शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

तालिका - 2

शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि की सार्थकता

शिक्षण माध्यम	माध्य	मानक विचलन	संख्या	टी मूल्य	पी	टिप्पणी
अंग्रेजी	27.64	1.682	262	28.504	.000	सार्थक
हिन्दी	21.43	3.052	238			

(1% सार्थकता स्तर पर, df = 498 स्वतंत्रता अंश के लिए तालिका मूल्य 2.58)

उपर्युक्त तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि शिक्षण माध्यम के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि का प्राप्त टीम मूल्य का मान (28.504) है जो 1% सार्थकता स्तर के तालिका मान (2.58) सारणी मूल्य से अधिक है, इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है | अर्थात शिक्षण माध्यम के आधार पर विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है |

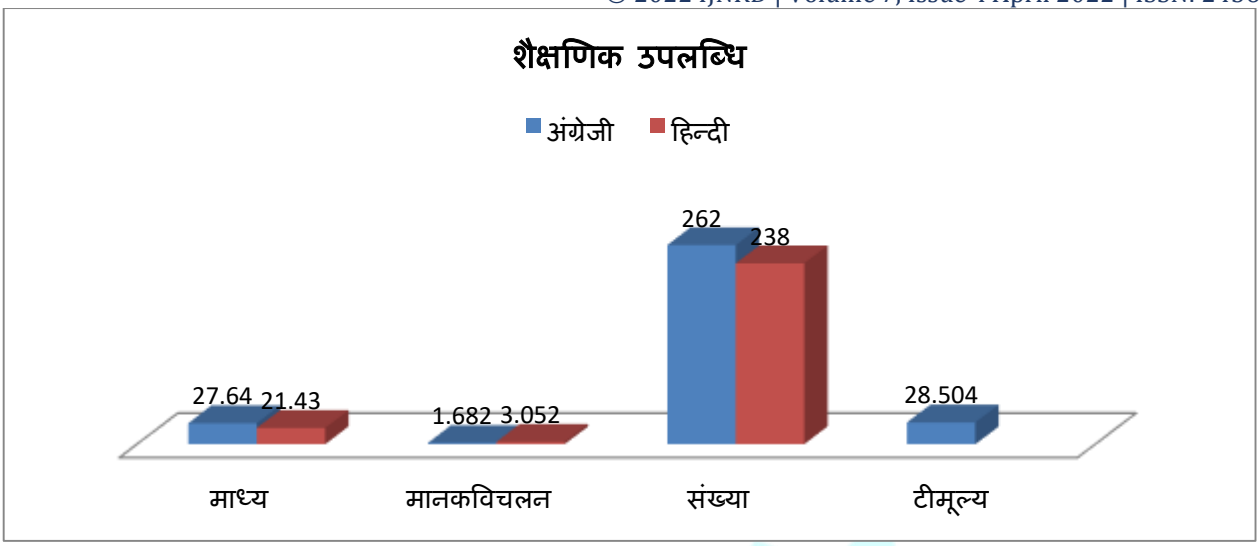

आकृति -2: शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का कुलावृति, मध्यमान और मानक विचलन का दंड आरेख

नल परिकल्पना-3 माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है |

तालिका -3

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध

चर	संख्या	सारणी मान	सह-संबंध गुणांक	सार्थकता
आत्म-सम्मान	500	0.114	0.627	सार्थक सहसंबंध
शैक्षणिक उपलब्धि	500			

(1% सार्थकता स्तर पर d f= 498स्वतंत्रता के लिए तालिका मूल्य 0.114)

उपर्युक्त तालिका सं. 3 से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.627 है जो 1% सार्थकता स्तर के तालिका मान 0.114 से अधिक है इसलिए नल परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध है |

शोध परिणाम

उपर्युक्त विश्लेषण से कुछ परिणाम ज्ञात हुए है जिसका विवरण निम्नलिखित है :

- शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान में सार्थक अंतर है | माध्य मान के अनुसार अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों का मान (88.84) है, जो हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों के माध्य मान (67.95) से अधिक है | अतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों का आत्म-सम्मान बेहतर है |

- शिक्षण माध्यम के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है | माध्य मान के अनुसार अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों का मान (27.64) है, जो हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों के माध्य मान (21.43) से अधिक है | अतः यह कहा जा सकता है कि हिन्दी माध्यम वाले विद्यार्थियों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बेहतर है|
- माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक संबंध है | उपर्युक्त परिणाम से स्पष्ट है कि प्राप्त सहसंबंध मूल्य 0.627 है जो उच्च सकारात्मक सहसंबंध को प्रदर्शित करता है | अर्थात माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के आत्म-सम्मान अच्छा होने से उनके आत्म-विश्वास में वृद्धि होती है | यही आत्म-विश्वास विद्यार्थियों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को बेहतर करने में सहायक होता है|

निष्कर्ष

आत्म-सम्मान विद्यार्थियों के विकास में अत्यंत आवश्यक होता है | आत्म-सम्मान के कारण उनके संपूर्ण व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है | जिस विद्यार्थी का आत्म-सम्मान उच्च होगा वह जीवन के प्रत्येक कार्य आत्म-विश्वास के साथ करता है और उसे सफलता भी मिलती है | आत्म-सम्मान का प्रभाव विद्यार्थी के जीवन के साथ-साथ उनके शैक्षणिक उपब्धि पर भी प्रभाव डालता है | अतः एक शिक्षक का कर्तव्य होता है कि विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान विकसित करने के लिए सकारात्मक शिक्षण-अधिगम वातावरण स्थापित करें तथा पाठ्यक्रम में आत्म-सम्मान विकसित करने हेतु विविध गतिविधियों को शामिल करें, जिससे विद्यार्थी स्वयं को स्वीकार करते हुए अपनी प्रतिभा को पहचान सके और अपने आत्म-विश्वास में वृद्धि कर सके | यही आत्म-विश्वास उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के साथ-साथ उनके सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकता है |

सन्दर्भ सूची :

Cheema,G.K.,& Bhardwaj M.,(2021). Study of Self Esteem and Academic Achievement in relation to Home Environment among Adolescents. *European Journal of Molecular and Clinical Medicine,8*(1)1978-1987.

Crow, L. D., & Crow. (1969). Adolescent Development and Adjustment. *United States: McGrow-Hill*.

Cvencek, D., Fryberg, S. A., Covarrubias, R., & Meltzoff, A. N. (2017). Self-Concepts, Self-esteem, and Academic Achievement of Minority and Majority North American Elementary School Children. *Child Development, 89*(4), 1099-1109. doi:10.1111/cdev.12802

Giofrè, D., Borella, E., &Mammarella, I. C. (2017). The Relationship between Intelligence, Working Memory, Academic Self-esteem, and Academic Achievement. *Journal of Cognitive Psychology, 29*(6), 731-747. doi:10.1080/20445911.2017.1310110

Hassan, A., Jami, H., & Aqeel, M. (2016). Academic Self-concept, Self-esteem, and Academic Achievement among Truant and Punctual Students. Pakistan *Journal of Psychological Research, 31*(1).

Rosenberg, M. (2015). *Society and the adolescent self-image*. Princeton University Press.

Ross,J.S.,Ground Work of Educational Psychology, Landon: George G. Harrap,1951.

Smith, E. R., Mackie, D. M., & Claypool, H. M. (2014). *Social psychology* (4th ed.). Psychology Press.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation